पाठ - 17

बीती विभावरी जाग री (कविता)

कवि - जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि हैं, जिन्होंने प्रकृति के सान्दर्य पर आधारित अनेक **कविताएँ** लिखी हैं। उन्होंने प्रकृति को मानव की तरह व्यवहार करते हुए दिखाया है। इसी तरह की उनकी एक सुन्दर कविता है– 'बीती विभावरी जागरी'। आप कविता के उस रूप से खूब परिचित है, जिसे सस्वर गाया जाता है। **जी हाँ,** कविता के इस रूप को गीत कहते हैं। यह कविता भी एक गीत है। इस पाठ में उनकी इसी कविता को पढ़ेंगे।

बीती विभावरी जाग री।
अंबर पनघट में डुबो रही,
तारा घट ऊषा नागरी। ..... (1)

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,

किसलय का अंचल डोल रहा

लो यह लतिका भी भर लाई-

मधु मुकुल नवल रस गागरी .... (2)

अधरों में राग अमंद पिए,

अलकों में मलयज बंद किए,

तू अब तक सोई है आली !

आँखों में भरे विहाग री ! .... (3)

व्याख्या

(1) अंबर पनघट ..... नागरी।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी **की कविता** 'बीती विभावरी जाग री' से ली गई है, **इसके** कवि जयशंकर प्रसाद **हैं**।

प्रसंग :– इन पंक्तियों के माध्यम से कवि जयशंकर प्रसाद पकृति के सौन्दर्य का वर्णन **उपमेय एवं** उपमान के द्वारा कर रहे हैं।

व्याख्याः– कवि कहता है एक स्त्री पनघट पर **पहुँचकर** घड़ा डुबो रही है। स्त्री है ऊषा, पनघट है आकाश और घड़ा है तारा। अर्थात् ऊषा आकाश में तारों को डुबो रही है अर्थ हुआ सुबह हो रही है, आकाश में तारे डूब रहे हैं। एक सखी दूसरी से कहती है कि सखी उठ, अब रात बीत चुकी है और ऊषा रूपी स्त्री आकाश रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही ह। अर्थ हुआ ऊषाकाल हो गया है। आकाश से रात की कालिमा दूर हो गई है और आसमानी रंग दिखने लगा है। आप जानते हैं कि पानी का रंग भी आसमानी ही दिखता है इसलिए **यहाँ** आकाश की कल्पना पानी भरने के घाट के रूप मे की गई है। आकाश का रंग बदल रहा है और तारों की झिलमिलाहट भी हल्की होते होते लुप्त होती जा रही है, जैसे घड़ा देखते–देखते गुडुप से पानी में डूब जाता है।

विशेष :– **(1) इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है।**

(2) प्रातःकालीन मानवीय गतिवधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है। अंबर–पनघट .... नागरी में रूपक अलंकार है।

(2) खग कुल, ... रस नागरी।

संदर्भ :– प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठय–पुस्तक हिन्दी **की कविता** 'बीती **विभावरी** जाग री' से लिया गया है, जिसके कवि जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रसंग :– इन पंक्तियों के माध्यम से कवि प्रातः काल होने पर पक्षियों के **कलरव**, फूलों के खिलने मंद**-**मंद हवा का सुन्दर चित्र प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या– प्रातःकाल हो गया है, इस तथ्य पर बल देते हुए सखी कहती है कि पक्षियों के कलरव का स्वर सुनाई दे रहा है और कोंपल के आंचल में थिरकन हो रही है, अर्थात् धीमी धीमी हवा से कोंपलें थिरकने लगी हैं और सुनो, यह लता भी अपने अधखिले फूलरूपी नगरी में नया रस भर लाई है। कली से फूल बनने की प्रक्रिया में अधखिले फूल की आकृति कलश यानी गगरी जैसी होती है और बीच में ताजा रस से पूर्ण पराग होता है। अतः यहां अधखिले फूल और रस से भरी गगरी की समानता के आधार पर सुन्दर रूपक बन पड़ा है।

विशेष :– **(1) इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है।**

(2) कवि प्रातः काल होने पर पक्षियों के **कलरव**, फूलों के खिलने मंद**-**मंद हवा का सुन्दर चित्र प्रस्तुत कर रहा है।

(3.) अधरों में ..... विहाग री।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी **की कविता** 'बीती विभावरी जाग री' **से** ली गई है, जिसके कवि जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि प्रातः काल के क्रियाकलापों का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या :–प्रातःकाल की सूचना देने के साथ–साथ सखी को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि सखी! सुबह हो गई है और सारा संसार अपने क्रियाकलापों में लगा हुआ है, पर तू अपने होठों में कभी मंद न पड़ने वाला राग लिए हुए और अपने केशों में सुगंधित वायु को समेटे तथा **आँखों** में रात की खुमारी लिए अभी तक सोई हुई है। अगर तू उठे तो प्रकृति का सौन्दर्य मानवीय उमंग और उल्लास से और अधिक निखर **उठेगा**।

विशेष :– **इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है।**

राग तथा अनुराग का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया गया है।

सारांश

कवि कहता है दरअसल इस गीत की पहली पंक्ति सिर्फ एक कथन है–रात बीत चुकी है, जाग।' और दूसरे में मनुष्य के लिए उद्‌बोधन है। इस पूरे गीत में प्रकृति और सखी की परस्पर स्थिति का अंकन है और सखी को प्रकृति के अनुकूल सक्रिय होने की प्रेरणा।

गीत के पहले बंद में **प्रातः** बेला का अर्थात् सुबह के सौन्दर्य तथा उसकी हलचल का चित्रण है। इसके साथ–साथ रूपक अलंकार का उपयोग भी कविता को प्रभावशाली बनाता है। हम सब जानते हैं कि प्रकृति की गतिविधि**याँ** अटल हैं। प्रकृति के ये क्रियाकलाप हम अंधकार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं। प्रस्तुत गीत में प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए उद्‌बोधन किया गया है, लेकिन उद्‌बोधन के साथ–साथ प्रकृति और स्त्री के सौन्दर्य और इन दोनों के सौन्दर्य का संबंध चित्रित है।

जीवन परिचय

जयशंकर प्रसाद

जन्म : जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 में काशी के प्रसिद्ध सुंघनी साहू परिवार में हुआ था।

शिक्षा : बचपन में ही पिता का देहावसान हो जाने और बहुत सी विपरीत घरेलू परिस्थितियों के कारण उनकी शिक्षा मुख्यतः घर पर ही हुई।

रचनाएं : चित्राधार, झरना, **आँसू,** लहर, कामायनी, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, स्कंदगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, तितली**, कंकाल,ईरावती (अपूर्ण)**

साहित्य में स्थान– जयशंकर प्रसाद छायावाद के आधार स्तम्भ माने जाते हैं। पहले वह **ब्र**जभाषा में लिखते थे, परन्तु बाद में उन्होंने खड़ी बोली में लिखना प्रारम्भ कर दिया था।

मृत्यु : जयशंकर प्रसाद जी की मृत्यु 1937 में हुई थी।

?